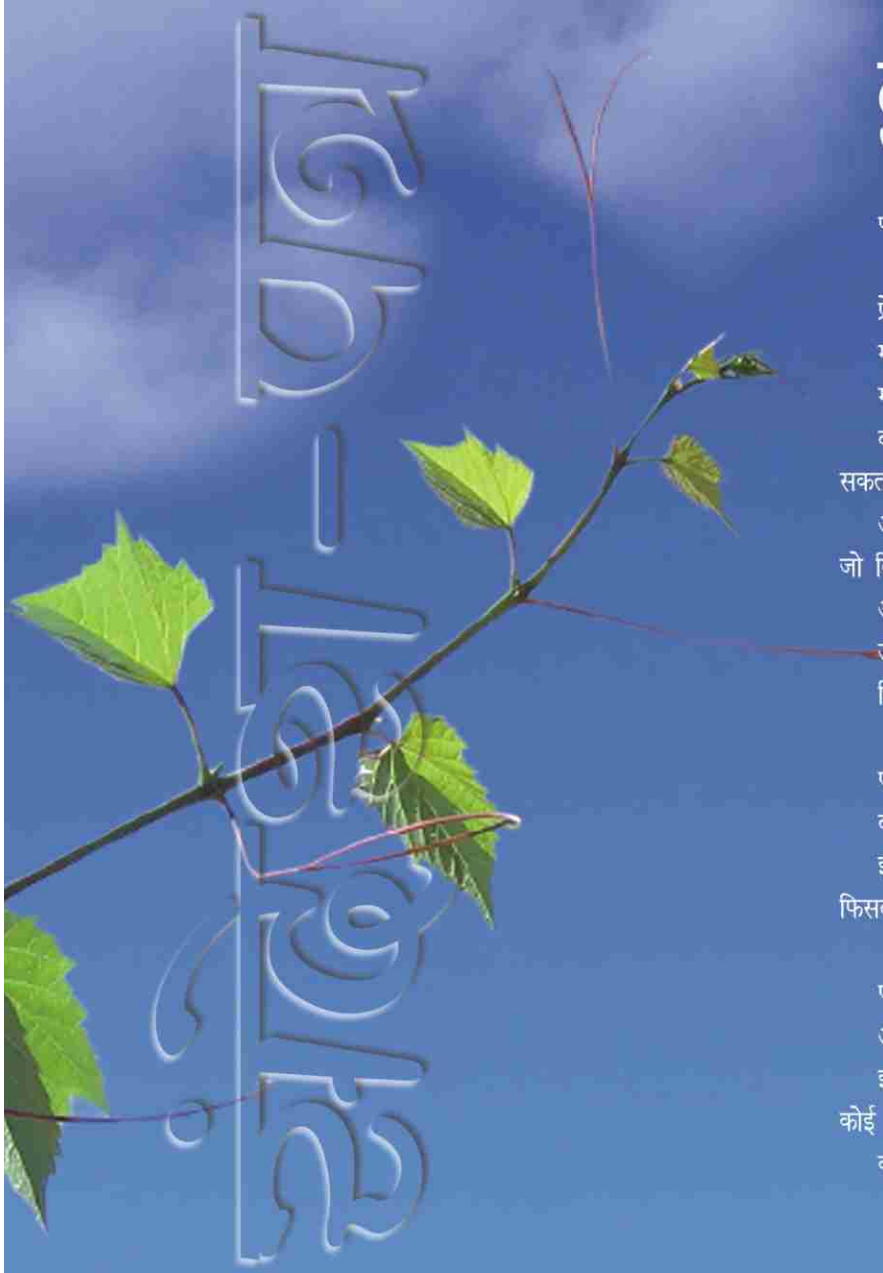

ओशो-पत्र

मनुष्य अपनी वासना के कारण दुख पाता है

प्यारी ध्यान सिद्धि,

प्रेम।

मनुष्य दुःख क्यों पाता है?

मनुष्य अपनी वासना के कारण दुःख पाता है।

वासना है कुछ ऐसा पाने की जिसे कभी नहीं पाया जा सकता।

और वासना है उन वस्तुओं को सदैव अपने पास रखने की जो कि वस्तुतः अस्थायी हैं।

और, इन सब में मुख्य उसका स्वयं का अहं है।

उसका अपना स्व।

किंतु, सारी वस्तुएं अस्थायी हैं।

परिवर्तन के अलावा सब कुछ परिवर्तित हो जाता है।

वस्तुतः कुछ है नहीं, क्योंकि हर चीज एक प्रक्रिया है।

इसलिए जैसे ही कोई उन्हें पकड़ने की कोशिश करता है ये फिसल जाती हैं।

पकड़ने वाला स्वयं ही निरंतर फिसल रहा है।

और, तब निराशा होती है।

इसे ठीक से जान लो—इसे ठीक से समझ लो और तब कोई दुःख नहीं होगा।

क्योंकि, तब तुमने जड़ को ही उखाड़ दिया।

—ओशो
मौन संगीत